मुक्त चिन्तन

News Letter

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

मुक्त चिन्तन

26 नवम्बर, 2024

मुक्त विश्वविद्यालय में संविधान दिवस समारोह का आयोजन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में दिनांक 26 नवंबर 2024 को पूर्वाह्न 11:30 बजे संविधान दिवस कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एम. पी. दुबे, पूर्व कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मुख्य वक्ता प्रो. बद्री नारायण, निदेशक, गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सत्यकाम जी ने की। कार्यक्रम में संविधान की प्रस्तावना का पाठ हुआ साथ ही संविधान के प्रति निष्ठावान रहने की सामूहिक शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम में प्रो. एम. पी. दुबे द्वारा लिखित पुस्तक 'धर्म निरपेक्ष भारत : संविधान के आईने की नजर से (आजादी से अमृतकाल तक)' का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री विनय कुमार द्वारा संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया। तत्पश्चात विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सत्यकाम जी द्वारा सभी को संविधान के प्रति निष्ठावान रहने की सामूहिक शपथ दिलाई गई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ0 त्रिविक्रम तिवारी

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी के चित्र पर माल्यार्पण करते एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए माननीय अतिथिगण

कार्यक्रम के प्रारंभ में विश्वविद्यालय के कुलसचिव कर्नल विनय कुमार द्वारा संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया। तत्पश्चात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत्यकाम ने सभी को संविधान के प्रति निष्ठावान रहने की सामूहिक शपथ दिलाई। कार्यक्रम संयोजक डॉ आनंदानंद त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन एवं संचालन आयोजन सचिव डॉ त्रिविक्रम तिवारी द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का आनलाइन प्रसारण प्रयागराज स्थित मुख्यालय सहित सभी 12 क्षेत्रीय केन्द्रों प्रयागराज, लखनऊ, कानपुर, अयोध्या, झांसी, बरेली, मेरठ, गाज़ियाबाद, वाराणसी, आजमगढ़, गोरखपुर एवं आगरा पर किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के निदेशकों, अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं शिक्षार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत करते हुए आयोजन समिति सदस्यगण

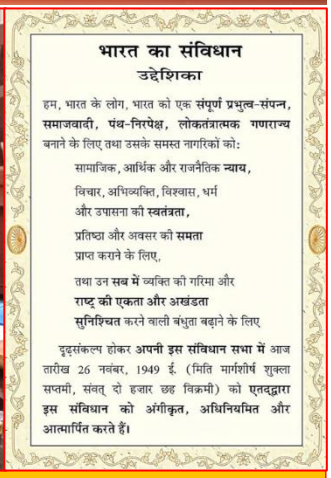

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

संविधान की प्रस्तावना का वाचन करते हुए कुलसचिव वनय कुमार

माननीय अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ0 आनन्दा नन्द त्रिपाठी

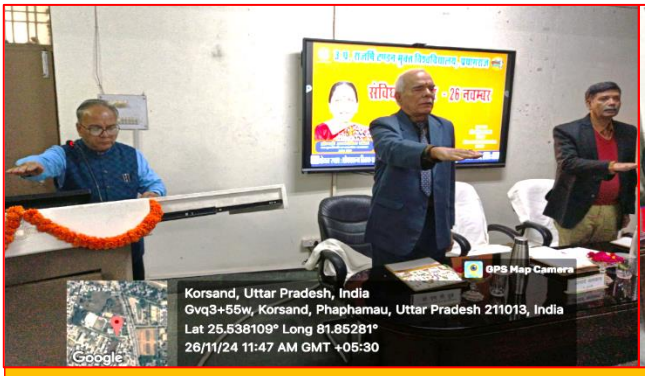

संविधान के प्रति निष्ठावान रहने की सामूहिक शपथ दिलाते हुए माननीय कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम जी

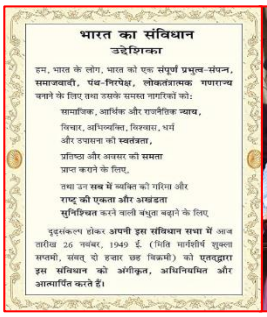

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

भारतीय संविधान भारत के लोगों की आकांक्षाओं का प्रतिरूप– प्रोफेसर बद्रीनारायण

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रोफेसर बद्री नारायण, निदेशक, गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूंसी,प्रयागराज द्वारा 'भारतीय संविधान एवं दलित मुक्ति' विषय पर व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान में उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान भारत के लोगों के आकांक्षाओं का प्रतिरूप है। जिसमें समय के साथ परिवर्तन का होना इसकी गत्यात्मकता को प्रदर्शित करता है। उन्होंने कहा कि संविधान कानून के रूप में, फिर कानून नीति के रूप में परिवर्तित होता हुआ जन जीवन को प्रभावित करता है। उन्होंने व्यापक परिपेक्ष्य में संविधान की व्याख्या करते हुए बताया कि भारतीय संविधान समाज के परिधि के लोगों के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन करने का आधार रहा है।

धर्मनिरपेक्ष भारत : संविधान के आईने की नजर से (आजादी से अमृतकाल तक) पुस्तक का विमोचन

प्रोफेसर एम. पी. दुबे, पूर्व कुलपति, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा संपादित
धर्मनिरपेक्ष भारत : संविधान के आईने की नजर से (आजादी से अमृतकाल तक) पुस्तक का विमोचन करते हुए माननीय अतिथिगण

धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की मूल भावना में निहित –प्रोफेसर एम. पी. दुबे

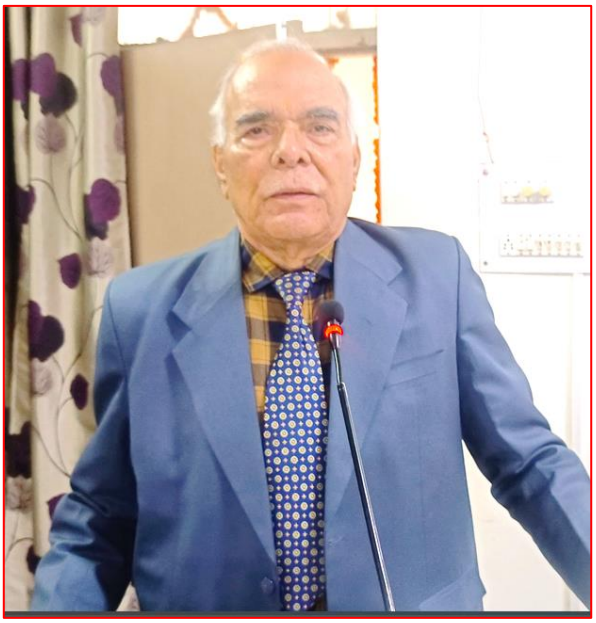

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एम. पी. दुबे, पूर्व कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने अपने वक्तव्य में कहा कि धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की मूल भावना में निहित है। उन्होंने कहा कि धर्मनिरपेक्षता मात्र संविधान की प्रस्तावना में ही नहीं बल्कि संविधान के सभी भाग में समाहित हैं। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता की व्यापक परिभाषा बताते हुए कहा कि धर्मनिरपेक्षता धर्म से अलगाव नहीं है बल्कि सर्वधर्म समभाव का व्यवहार है। उन्होंने कहा कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता पाश्चात्य धर्मनिरपेक्षता से अलग है। भारतीय संदर्भों में यह भारतीय मूल्यों से जनित है। उन्होंने कहा कि परिस्थिति के अनुरूप भारतीय संविधान में अब तक कुल 106 परिवर्तन हुए हैं और यह भारतीय संविधान की जीवंतता का प्रमाण है।

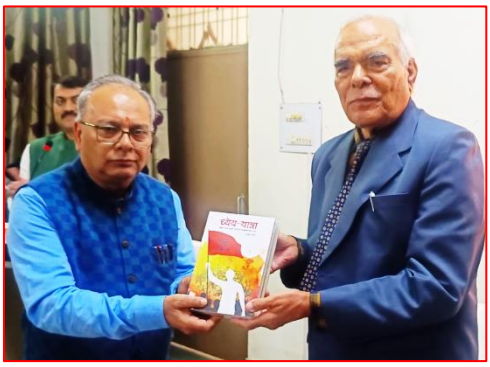

मुख्य वक्ता प्रो0 बद्री नारायण जी एवं मुख्य अतिथि प्रो0 एम.पी. दुबे जी को अंगवस्त्र, पुस्तक एवं हरित फल भेंट कर उनका सम्मान करते हुए माननीय कुलपति प्रो0 सत्यकाम जी

माननीय कुलपति प्रो0 सत्यकाम जी को अंगवस्त्र, पुस्तक एवं हरित फल भेंट कर उनका सम्मान करते हुए डॉ0 आनन्दा नन्द त्रिपाठी

वित्त अधिकारी, श्रीमती पूनम मिश्रा एवं कुलसचि श्री विनय कुमार को अंगवस्त्र, एवं हरित पौधा भेंट कर उनका सम्मान करते हुए कमशः डॉ0 दीप शिखा श्रीवास्तव एवं प्रो0 संजय कुमार सिंह

भारतीय संविधान स्वतंत्र भारत की आशाओं से निर्मित सर्वोच्च विधान है : प्रोफेसर सत्यकाम

अध्यक्षीय उद्बोधन में उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कुलपति प्रो. सत्यकाम ने कहा कि भारतीय संविधान स्वतंत्र भारत की आशाओं से निर्मित सर्वोच्च विधान है जो सभी विचारधाराओं को समाहित करते हुए आगे बढ़ने की बात करता है। यह वह दिग्दर्शक है जो हमें सदैव राष्ट्र सेवा में कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने की दिशा दिखाता है। उन्होंने यह विश्वास प्रकट किया की उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय संविधान के मूल्यों का अनुशरण करते हुए अपने कार्यों के निष्पादन में श्रेष्ठता स्थापित करेगा। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए अत्यंत गौरव का विषय है की आज हम संविधानिक व्यवस्था के अंतर्गत विश्व में एक सफल लोकतंत्र के रूप मे स्थापित हैं।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ0 त्रिविक्रम तिवारी

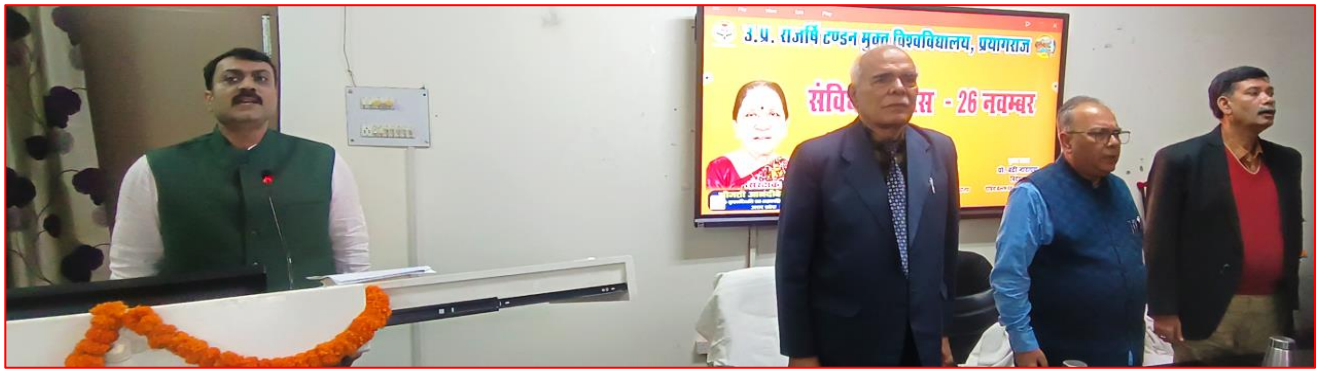

इस कार्यक्रम का आनलाइन प्रसारण प्रयागराज स्थित मुख्यालय सहित सभी 12 क्षेत्रीय केन्द्रों (प्रयागराज, लखनऊ, कानपुर, अयोध्या, झांसी, बरेली, मेरठ, गाज़ियाबाद, वाराणसी, आजमगढ़, गोरखपुर एवं आगरा) पर किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के निदेशकों, अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं शिक्षार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

क्षेत्रीय केन्द्र प्रयागराज

क्षेत्रीय केन्द्र बरेली

क्षेत्रीय केन्द्र आगरा

क्षेत्रीय केन्द्र झाँसी

क्षेत्रीय केन्द्र कानपुर

क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ

क्षेत्रीय केन्द्र आजमगढ़

क्षेत्रीय केन्द्र नोएडा

क्षेत्रीय केन्द्र अयोध्या

क्षेत्रीय केन्द्र गोरखपुर

क्षेत्रीय केन्द्र मेरठ

क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी